What is Cultural Heritage?

सांस्कृतिक विरासतों का संरक्षण करने के लिए उन सभी तरीकों का उपयोग किया जाता है जो उस संपत्ति को यथासंभव उसकी मूल स्थिति के करीब रखने में प्रभावी साबित होता है।" सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण अक्सर कला संग्रह और संग्रहालयों से जुड़ा होता है और इसके देखभाल और प्रबंधन में ,जाँच करना , परीक्षण करना, प्रलेखन, प्रदर्शन, भंडारण, निवारक संरक्षण और पुनःस्थापन के माध्यम से शामिल होता है।

अब यह दायरा केवल कला के संरक्षण से ज्यादा विस्तृत हो गया है, क्योंकि इसमें कलाकृति और वास्तुकला की सुरक्षा और देखभालके साथ साथ , अन्य सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कार्यों के व्यापक सेट की सुरक्षा और देखभाल भी शामिल है। सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को एक प्रकार की नैतिक प्रतिष्ठा के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण सरल नैतिक दिशा निर्देशों के अनुसार किया जा सकता है :

- न्यूनतम हस्तक्षेप;
- उपयुक्त सामग्री और प्रतिवर्ती तरीके;
- सभी कार्यों का पूर्ण प्रलेखन करना

अक्सर मूल रूप , मौलिक आकृति , भौतिक गुणों को बनाए रखने और रिवर्स परिवर्तनों की क्षमता के बीच समझौता हो जाता है । भविष्य में उपचार, जांच और उपयोग में होने वाली समस्याओं को कम करने के लिए अब प्रत्यावर्तन पर जोर दिया जाता है।

संरक्षकों को एक उपयुक्त संरक्षण रणनीति तय करने और उनके अनुसार अपनी पेशेवर विशेषज्ञता लागू करने से पहले , उनके हितधारकों , कार्य के सही मूल्यों और किये जाने वाले काम के सही अर्थ और इसमें लगने वली सामग्री की भौतिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए।

सीसर ब्रांडी ने अपने पुनर्स्थापना के सिद्धांत में वर्णन किया हैं ,-"पुन्ः स्थापन वह पद्धति है जिसमें कलाकृति की उसके भौतिक और उसके ऐतिहासिक रूप में,भविष्य में इसे प्रसारित करने की दृष्टि से सराहना की जाती है। "।

Intangible Heritage

अमूर्त संस्कृति?

- अमूर्त संस्कृति किसी समुदाय, राष्ट्र आदि की वह निधि है जो सदियों से उस समुदाय या राष्ट्र के अवचेतन को अभिभूत करते हुए निरंतर समृद्ध होती रहती है।
- अमूर्त सांस्कृतिक समय के साथ अपनी समकालीन पीढ़ियों की विशेषताओं को अपने में आत्मसात करते हुए मौजूदा पीढ़ी के लिये विरासत के रूप में उपलब्ध होती है।
- अमूर्त संस्कृति समाज की मानसिक चेतना का प्रतिबिंब है, जो कला, क्रिया या किसी अन्य रूप में अभिव्यक्त होती है।
- उदाहरणस्वरूप, योग इसी अभिव्यक्ति का एक रूप है। भारत में योग एक दर्शन भी है और जीवन पद्धति भी। यह विभिन्न शारीरिक क्रियाओं द्वारा व्यक्ति की भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है।

यूनेस्को (UNESCO) और भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

- यूनेस्को की स्थापना वर्ष 1945 में स्थायी शांति बनाए रखने के रूप में "मानव जाति की बौद्धिक और नैतिक एकजुटता" को विकसित करने के लिये की गई थी।
- यूनेस्को सांस्कृतिक और प्राकृतिक महत्त्व के स्थलों को आधिकारिक तौर पर विश्व धरोहर की मान्यता प्रदान करती है।
    - ध्यातव्य है कि ये स्थल ऐतिहासिक और पर्यावरण के लिहाज़ से भी महत्त्वपूर्ण होते हैं।
- भारत में यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त कुल 38 मूर्त विरासत धरोहर स्थल (30 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और 1 मिश्रित) हैं और 13 अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें हैं।
- यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की सूची में शामिल हैं (1) वैदिक जप की परंपरा (3) रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन (3) कुटियाट्टम, संस्कृत थिएटर (4) राममन, गढ़वाल हिमालय के धार्मिक त्योहार और धार्मिक अनुष्ठान, भारत (5) मुदियेट्टू, अनुष्ठान थियेटर और केरल का नृत्य नाटक (6) कालबेलिया लोक गीत और राजस्थान के नृत्य

(7) छऊ नृत्य (8) लद्दाख का बौद्ध जप: हिमालय के लद्दाख क्षेत्र, जम्मू और कश्मीर, भारत में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ (9) मणिपुर का संकीर्तन, पारंपरिक गायन, नगाडे और नृत्य (10) पंजाब के ठठेरों द्वारा बनाए जाने वाले पीतल और तांबे के बर्तन (11) योग (12) नवरोज़, नोवरूज़, नोवरोज़, नाउरोज़, नौरोज़, नौरेज़, नूरुज़, नोवरूज़, नवरूज़, नेवरूज़, नोवरूज़ (13) कुंभ मेला।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की राष्ट्रीय सूची

हाल ही में संस्कृति मंत्रालय (Ministry of Culture) ने अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (Intangible Cultural Heritage-ICH) की राष्ट्रीय सूची लॉन्च की है।

प्रमुख बिंदु

- ध्यातव्य है कि भारत में अनोखी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) परंपराओं का भंडार है, जिनमें से 13 को यूनेस्को (UNESCO) द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में भी मान्यता दी है।
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) की राष्ट्रीय सूची का उद्देश्य भारतीय अमूर्त विरासत में निहित भारतीय संस्कृति की विविधता को नई पहचान प्रदान करना है।
    - इस राष्ट्रीय सूची का उद्देश्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के विभिन्न राज्यों में मौजूद अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्त्वों के संबंध में जागरूकता बढ़ाना और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना है।
- उल्लेखनीय है कि यह पहल संस्कृति मंत्रालय के विज़न 2024 (Vision 2024) का एक हिस्सा भी है।
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिये यूनेस्को के वर्ष 2003 के कन्वेंशन (Convention) का अनुसरण करते हुए संस्कृति मंत्रालय ने इस सूची को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को प्रकट करने वाले पाँच व्यापक डोमेन में वर्गीकृत किया है-
    - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में भाषा सहित मौखिक परंपराएँ और अभिव्यक्ति;
    - प्रदर्शन कला;

- सामाजिक प्रथाएँ, अनुष्ठान और उत्सव;
- प्रकृति एवं ब्रह्मांड के विषय में ज्ञान तथा अभ्यास;
- पारंपरिक शिल्प कौशल।

- अब तक इस राष्ट्रीय सूची में 100 से अधिक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) परंपराओं और तत्त्वों को शामिल किया गया है, इसमें भारत की 13 अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें भी शामिल हैं जिन्हें यूनेस्को (UNESCO) ने मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप मान्यता दी है।